धर्म और सम्प्रदाय

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

धर्म शब्द का अर्थ धारण करना है। धर्म प्रजा को धारण करता है। धर्म मानव को कर्त्तव्यों सत्कर्मों एवं गुणों की ओर ले जाता है। धर्म व्यक्ति की विविध रूचियों, इच्छाओं, आकांक्षाओं, आवश्यकताओं आदि के बीच संतुलन बनाये रखता है। सदाचार को धर्म का लक्षण माना गया है। सदाचार ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। धर्म वही है जो किसी को कष्ट नहीं देता अपितु लोक कल्याण करता है। धर्म का ही आश्रय ग्रहण करके व्यक्ति इस संसार में तथा परलोक में शांति प्राप्त करता है। जो व्यक्ति धर्म का सम्मान करता है धर्म उसकी सदैव रक्षा करता है। शरीर नष्ट हो जाने पर सबकुछ छूट जाता है, किन्तु धर्म जीव के साथ जाता है। धर्म को साक्षात् ईश्वर का स्वरूप माना गया है।

धर्म व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है। धर्म संजीवनी है और धर्म विकास का मार्ग है। वस्तु के स्वभाव को धर्म कहते हैं। जल का स्वभाव शीतलता है, अग्नि का स्वभाव उष्णता है। वस्तु कभी भी अपने स्वभाव को नहीं छोड़ती है। आत्मशुद्धि के साधन को धर्म कहा जाता है। धर्म को कल्याणकारी कहा गया है। अहिंसा, संयम और तप उत्कृष्ट मंगल कहे गये हैं।धर्म की अनेक परिभाषाएं की गयी हैं, जो धर्म के मर्म को व्यक्त करती हैं।

आत्मा को शुद्ध करने की प्रक्रिया को धर्म कहते हैं। धर्म का सम्बन्ध अध्यात्म के साथ है। इसको एक उदाहरण से समझाया जा सकता है। केले के ऊपर छिलका होता है। छिलका सम्प्रदाय है और गुदा उसका धर्म है। छिलके के बिना गुदा और गुदा के बिना छिलका नहीं रह सकता। धर्म की आराधना के लिए सम्प्रदाय बनाया गया है। धर्म मूल तत्व है और सम्प्रदाय धर्म को प्राप्त करने का मार्ग है। गन्तव्य एक है। रास्ता अलग–अलग है। मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्ना अर्थात प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि भिन्न–भिन्न है। भिन्न–भिन्न मत–मतान्तरों के कारण

ही सम्प्रदाय बनते हैं। सम्प्रदाय धर्म को सीमित कर देता है। धर्म सबको धारण करने वाला है।

भारतीय संस्कृति पुरुषार्थ प्रदान संस्कृति है। जीवन के चार पुरुषार्थ हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। यह जीवन पद्धति है। धर्म व्यक्ति में मानवता विकसित करता है। धर्म के बिना मनुष्य पंगु है। मनुष्य के अन्दर तीन प्रकार की चेतना हैं– पशु चेतना, मानव चेतना और दैवी चेतना। जो पशु चेतना हैं वह निष्क्रिय चेतना है। इसमें मनुष्य बिना विचारे ही कार्य करता है। मानव चेतना बौद्धिक चेतना है। इसमें मानव जो कुछ भी कार्य करता है, वह सोच विचार के कार्य करता है। दैवी चेतना जगत् कल्याण की चेतना है। धार्मिक वह होता हैं जो धर्म का पालन करता है। धार्मिक अनैतिकता नहीं करता, बल्कि नैतिक कार्य करता है। सभी को समदृष्टि से देखता है।

धर्म वस्तुतः आस्था का विषय है। आत्म शुद्धि साधनं धर्म इस परिभाषा के अनुसार धर्म वह तत्व है, जिससे आत्मा शुद्ध होती है। आत्मा मूल रूप से ज्ञानस्वरूप है। वस्तु का स्वभाव ही धर्म कहलाता है। जो इतर चीजें होती हैं, वह अधर्म है। जैसे पानी का गुण है शीतलता, अग्नि का धर्म है उष्णता। जब उनके गुण को विकृत किया जाता है तो उनका स्वरूप बदल जाता है। जब वह अपने स्वरूप में रहता है तो वह तत्व धर्म तत्व कहलाता है। धर्म व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है। एक उदाहरण के द्वारा इसको समझा जा सकता है। धर्म को सम्प्रदाय की जंजीर से बांध दिया जाता है तो धर्म विकृत हो जाता है। भारत में अनेक धर्म हैं। जैन, बौद्ध, सिक्ख, इस्लाम, पारसी और हिन्दू धर्म। ये सब सम्प्रदाय है। सबकी अपनी–अपनी पूजा पद्धति और उपासना पद्धति है और उस पूजा पद्धति के अनुसार धर्म को संकीर्ण कर दिया जाता है।

धर्म मानव को मानव से जोड़ता है। धार्मिक क्रियाकलाप के आधार पर मानव अपने आस्था को प्रकट करता है। राष्ट्र निर्माण में सबका योगदान हों जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके। भेद–भाव की खांई को समाप्त करने के लिए सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए। जन्म के समय सभी समान होते हैं, किन्तु पैदा होने के बाद सम्प्रदाय की छाप लगा दी जाती है। यह सम्प्रदाय ही एक ऐसा तत्व है, जो मानव–मानव में भेद कर देता है। जन्म के समय

बच्चा कोरे कागज के समान होता है। परिवार और समाज में जो शिक्षा उसे दी जाती है, वह वैसा ही बन जाता है।

हिन्दू परिवार में जन्मा हुआ बच्चा हिन्दू संस्कारों में पलता है और मुस्लिम समाज में पैदा हुआ बच्चा मुस्लिम संस्कारों से पलता–पुस्ता है। इसी प्रकार जैन, बौद्ध, सिख, ईसाई परिवारों में जन्म लेने वाले बच्चे धर्मानुकूल सामाजिक वातावरण में बड़े होते हैं। सम्प्रदाय भेद पैदा करता है और धर्म एकरूपता दिखलाता है। कही धर्म के नाम पर, कही सम्प्रदाय के नाम पर, कही देश के किसी हिस्से को तोड़ने के नाम पर, कही किसी देश की सम्प्रभुता को विखंडित करने के नाम पर, कही धर्म निरपेक्षता के नाम पर सम्प्रदायवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत एक लोकतंत्रात्मक देश है। इस देश में धर्म और सम्प्रदाय को संविधान द्वारा मान्यता नहीं दी गई है। भारत देश का कोई भी नागरिक चाहे जिस धर्म और सम्प्रदाय को स्वीकार करें, यह उसका निजी मामला है। धर्म के नाम पर और सम्प्रदाय के नाम पर उनके साथ किसी भी प्रकार का भेद–भाव नहीं किया जाता है।